4 जनवरी, 2010 को 1830 बजे दरबार हाल, ताज पैलेस होटल में इन्फोसिस पुरस्कार 2009 के वितरण समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

आज के समारोह में भाग लेते हुए और पाँच वर्गों में से प्रत्येक वर्ग में अत्यन्त विशिष्ट तथा कुशल विजेताओं को इन्फोसिस पुरस्कार 2009 प्रदान करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। देश के व्यावसायिक परिदृश्य को बदलने के मामले में अपने नूतन कार्य के बल पर इस क्षेत्र में नया आयाम जोड़ने में इन्फोसिस द्वारा की गई यह पहल वस्तुतः सराहनीय है।

मैं इन्फोसिस पुरस्कार 2009 के विजेताओं को बधाई देता हूँ। इससे अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में किए गए इनके असाधारण योगदान को मान्यता प्राप्त हुई है। उन्होंने अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से कार्य किया जिससे उनकी सारी बाधाएँ दूर हो गईं। आज इन्हें जो मान्यता मिली है, उसका अनुसरण किया जाएगा और जिसमें दूसरों को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा मिलेगी। इससे भौतिक, जैविक और सामाजिक विज्ञानों तथा ज्ञान की सम्बद्ध शाखाओं के अनुसंधानकर्ताओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा।

दुनिया भर का अनुभव यह दर्शाता है कि वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी नवोन्मेष किसी भी राष्ट्र की समृद्धि की कुंजी होती है। हमारे समाज के अतीत और वर्तमान का वैज्ञानिक अध्ययन तथा भौतिक कल्याण की परिधि में भी यह उतना ही अनिवार्य है। इस कारण से स्वाधीनता आंदोलन के समय से ही नागरिकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना राष्ट्रीय लक्ष्य रहा है। हमारी जनता की राजनीतिक एवं आर्थिक स्वाधीनता के लिए इसे आवश्यक समझा गया। हमारे संविधान के अनुच्छेद 51 क में यह परिलक्षित होता है जिसमें "वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता और जिज्ञासा तथा सुधार की वृत्ति को विकसित करना" प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बताया गया है।

ज्ञान उद्योगों, विशेषकर, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी और भेषजीय उद्योगों में हमारी उपलब्धियाँ इन तीनों क्षेत्रों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा में किए गए हमारे प्रचुर निवेश के कारण प्राप्त हुई हैं। हमारे परमाणु उर्जा, अंतरिक्ष और रक्षा-संबंधी उद्योगों, तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्थापनाओं ने उन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्नातकों की, जो इसके बाद या तो उद्यमी बन गए अथवा निजी क्षेत्र में चले गए, मांग पैदा की और इन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी स्नातकों का पोषण किया।

फिर भी, यह स्वीकार करना पड़ेगा कि शुद्ध एवं अनुप्रयोगी विज्ञान में अनुसंधान को इसका उचित श्रेय प्राप्त नहीं हुआ है। आधारभूत विज्ञान में अनुसंधानकर्त्ताओं के रूप में आज का हमारा वैज्ञानिक योगदान हमारी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त नहीं है। नवोन्मेषों और पेटेण्टों के क्षेत्र में हमारे योगदान पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है और इससे हमारे मित्रों तथा प्रतिस्पर्धियों की तुलना में हमारी स्थिति हीनतर हो जाती है। इसका एक कारण हमारे समाज की मूल्य व्यवस्था है जिसमें स्वयं ज्ञान के लिए इसकी खोज को प्राथमिकता प्रदान किए जाने पर बल नहीं दिया जाता। मुझे इस बात की जानकारी है कि अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए विषयों का चयन लाभप्रद रोजगार की संभावना से निदेशित होता है। शहरी एवं महानगरीय क्षेत्रों के अनेक छात्र उच्च शिक्षा में दिलचस्पी नहीं लेते हैं, बल्कि वे सेवा उद्योगों में नौकरी करना पसंद करते हैं।

तथापि, वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की अंत: क्षमता और इसके समावेशी विकास की दृष्टि व इसके सभी नागरिकों की मानवीय अंत: क्षमता का इष्टतम उपयोग को गुणवत्ता युक्त उच्च शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच अधिकाधिक भागीदारी को प्रोत्साहित किए बिना साकार नहीं किया जा सकता। इसे सभी हितधारकों यथा सरकार, विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं एवं उत्कृष्ट संस्थानों, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों और यहां तक कि उद्यमशील पूंजीपतियों द्वारा संसाधनों के दोहन तथा उनके प्रयासों से साकार किए जाने की आवश्यकता है। हमें नए निवेशों और

निजी क्षेत्र से प्रोत्साहनों की आवश्यकता है ताकि हमारा युवावर्ग विज्ञान के क्षेत्र में जीवन-वृत्ति अपनाने की ओर अधिकाधिक रूप से प्रोत्साहित हो सकें। वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए संपूर्ण पारिस्थितिकी व्यवस्था पर इस संव्यवहार के एक अंश के रूप में ध्यान दिया जाना चाहिए जिसमें भारत और विदेश के अग्रणी अनुसंधान संस्थानों की भागीदारी, अनुसंधान प्रकाशनों के लिए सहायता और आधारभूत विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान, जहां व्यावसायिक दृष्टि से होने वाले लाभ की संभावनाएं बहुत कम हैं, में अनुसंधान करने के लिए प्रतिभावान छात्रों का सुनिश्चित वित्त पोषण किया जाना चाहिए। हमें राष्ट्रीय स्तर पर इसे मान्यता देने की जरूरत है ताकि अनुप्रयुक्त विज्ञान में सफलता और व्यावसायिक रूप से लाभप्रद प्रौद्योगिकीय नव परिवर्तन विज्ञान के मूल विषयों में अनुसंधान की ठोस नींव से निकल कर आए।

देवियो और सज्जनो,

हम उस दुनिया में रह रहे हैं जहां पर व्यावसायिक निगम मुख्यत: राष्ट्रीय एवं वैश्विक दोनों स्तरों पर प्रमुख आर्थिक मध्यम का काम कर रहे हैं। जैसा कि जेम्स वोल्फेनसॉन ने कहा है कि 'कंपनियों का उचित कामकाज विश्व अर्थव्यवस्था के लिए उतना ही महत्वपूर्ण होगा जिनता कि देशों के लिए उचित शासन'। विगत दो वर्षों की आर्थिक अस्तव्यस्तता कुछ स्थानों पर निजी लोभ एवं लापरवाही के प्रतिकूल एवं वैश्विक सार्वजनिक दुष्परिणामों को प्रदर्शित करती है। साधारण नागरिकों के हितों के संरक्षण का कार्य सरकारों पर आ गया है। सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निष्पक्षता, पारदर्शिता एवं जबावदेही को विनियमित करे।

इंफोसिस के व्यावसायिक प्रतिमान का महत्व निगमित उद्यम के हितधारकों की परिभाषा को विस्तृत कर रहा है। भारत में स्थापित और यहां पर ही स्थित वैश्विक निगम के रूप में, इंफोसिस कुछ ऐसे निगमों से एक निगम है जिसका उद्देश्य अपने हितधारकों एवं अन्य शेयरधारकों के साथ-साथ समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं को

भी प्राथमिकता प्रदान करना है। इसने निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व को नया अर्थ प्रदान किया है और इंफोसिस साइंस फाउंडेशन की स्थापना एक अन्य मील का पत्थर है।

मैं एक बार पुन: पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूं और श्री नारायण मूर्ति को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मुझे आमंत्रित किया।